हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-3)

DTVF/18(JS)-HL-HL3

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03 03/07/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

_____
मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

_____
पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में आर्य समाज का योगदान

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य ~~इस~~ भाषा के उस स्वरूप से है जो सर्वग्राह्य हो तथा राष्ट्र की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संवेदनाओं को वहन करने में सक्षम हो।

इसी परिप्रेक्ष्य में 'आर्य समाज' द्वारा किये गये प्रयासों को समाज का योगदान कहा जाएगा जो निम्नांकित हैं -

1. ✓ आर्यसमाज ने हिन्दी को 'आर्यभाषा' का नाम देकर गौरवान्वित किया
2. समाज के नियमों में पाँचवाँ- नियम हिन्दी भाषा का अध्ययन एवं उपयोग था।
3. = समाज द्वारा संचालित कन्या पाठशालाओं, महिला विद्यालयों आदि में हिन्दी का ~~अध्~~ अध्ययन आवश्यक था
4. = आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द स्वामी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में ही की।
5. समाज द्वारा प्रवचनों तथा सत्संगों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में हिन्दी के प्रयोग से जन-जन तक भाषा की पहुँच बढ़ी

6. गुरुकुल-काँगड़ी विश्वविद्यालय के माध्यम से हिन्दी को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्थान मिला।

इस प्रकार आर्य समाज की राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में अविस्मरणीय भूमिका है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा देने वाले लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के लिए 'स्वदेशी' का प्रश्न सदैव महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि रहा, इसी तारतम्य में उनके द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास हेतु दिए गए योगदान को देखा जा सकता है।

'केसरी' पत्र का संपादन करके तिलक ने गैर हिन्दी भाषी महाराष्ट्र में भी हिन्दी भाषा को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया।

पुनः उनके द्वारा यह माना गया कि राष्ट्र-भाषा के विकास के लिए समुचित छपाई की व्यवस्था की महती आवश्यकता है और इसीलिए उन्होंने 190 टाइप वाले केसरी' फॉन्ट का निर्माण किया इसे हिन्दी (देवनागरी) के टंकण को आसान बनाया

तिलक राष्ट्रीयता के विकास के लिए राष्ट्रभाषा के विकास को एक महत्वपूर्ण अंग मानते थे इसलिए उन्होंने अपने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषणों में भी हिन्दी का पक्ष लेते हुए आमजन से तथा मेहत्व वर्ग से इसके विकास का आह्वान किया।

गैरहिन्दी भाषी होते हुए भी उनके द्वारा किये गये अथक प्रयास हिन्दी राष्ट्रभाषा के इतिहास में सदैव स्मृत रखे जायेंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) देवनागरी लिपि पर गैर हिन्दी भाषाओं और अन्य लिपियों का प्रभाव

देवनागरी लिपि पर गैर हिन्दी भाषाओं में मुख्यत: आर्यभाषा परिवार की अन्य भाषाओं का प्रभाव रहा है जिनमें मराठी, बांग्ला, संस्कृत आदि प्रमुख हैं हालांकि फारसी और अँग्रेजी के विदेशी प्रभाव तथा अन्य लिपियों के प्रभाव भी महत्वपूर्ण रहे हैं जो इस प्रकार हैं।

1. 'ऋ', लृ, 'ष' आदि का स्वतन्त्र उच्चारण नहीं होने के बावजूद उपयोग संस्कृत के प्रभाव से है।

2. 'ळ' का प्रयोग मराठी भाषा के प्रभाव के कारण पाया जाता है।

3. नुक्ते का प्रयोग करके ज़, फ़ जैसे अँग्रेजी व फारसी ध्वनियों को देवनागरी में स्थान मिला जिससे देवनागरी अखिल-भारतीय लिपि बनने की ओर अग्रसर हुई।

4. आजकल सिंधी भाषा तथा द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव के कारण ए़, ऱ, ॳ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ड़ और ऩ की ध्वनियों में नुक्ता लगाकर इन भाषाओं को समाहित करने का प्रयास चल रहा है।

लिपियों का प्रभाव

1. अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप जो वर्तमान में सर्वमान्य है वह अरबी लिपि की देन है।

2. रोमन लिपि के प्रभाव से 'पूर्ण-विराम' की जगह • (फुल स्टॉप) लगाने की चर्चा जोरों पर है।

इस प्रकार अपनी लोचशीलता के कारण देवनागरी विश्व-लिपि बनने की ओर अग्रसर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में योगदान

केलॉग का व्याकरण। अपनी वस्तुनिष्ठता तथा स्पष्टता के लिए जाना जाता है। इसके योगदान को निम्न बिन्दुओं में देखा जा सकता है।

1. वस्तुनिष्ठ तथा मानक स्वरूप में ढालने के लिए इस व्याकरण में प्रायः लोक साहित्य के प्रयोगों को स्थान नहीं दिया गया है, न ही विदेशी लेखकों के प्रयोगों को महत्व दिया गया है।

2. लिंग, वचन तथा क्रिया के प्रचलित रूपों को समाहित किया गया है ताकि व्याकरण सुबोध हो सके।

3. प्रत्येक नियम के साथ उदाहरणों का पुट इसे स्पष्ट एवं सुग्राह्य बनाता है।

इस प्रकार केलॉग का व्याकरण, व्याकरण लेखन की परम्परा का महत्वपूर्ण पड़ाव बनकर उभरता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उन्नीसवीं सदी का खड़ी बोली आन्दोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

मुजफ्फरपुर (बिहार) के निवासी बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री का योगदान खड़ी बोली को काव्य-भाषा के रूप में प्रतिस्ठित करने में अहम है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के आगमन के पहले खत्री जी ने खड़ी बोली को काव्यभाषा बनाने का आंदोलन चलाया और 'हिन्दी व्याकरण', 'खड़ी बोली का पद्य', 'मौलवी स्टाइल की हिन्दी का ढंग भेद' आदि पुस्तकें लिखकर खड़ी बोली के मानक व काव्यानुकूल स्वरूप को विकसित करने का प्रयास किया।

अपने इन्हीं प्रयासों के कारण इन्हें 'प्रतापनारायण मिश्र' सम कवियों की आलोचना का भी शिकार होना पड़ा, पर वे हिन्दी खड़ी बोली के पक्ष में निर्भीक होकर खड़े रहे।

इन्हीं की परम्परा में आगे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक सम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विद्वान आगे आये तथा खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने में सहयोग दिया जो छायावाद के युग में चरम काव्यात्मकता को छू पाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता के बाद हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किये गए सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वतंत्रता-आंदोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महात्मा गाँधी का योगदान राष्ट्र-निर्माण और राष्ट्रभाषा निर्माण के क्षेत्र में अद्वितीय तथा अविस्मरणीय है।

उन्होंने हिन्दी के 'हिन्दुस्तानी' स्वरूप को राष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय लिया तथा 'गुजरात हिन्दी महासभा' के भरूच अधिवेशन (1917) में सैद्धांतिक रूप से राष्ट्रभाषा हेतु निम्नांकित प्रतिमान तय किये

1. भाषा की पहुँच अंतिम व्यक्ति तक हो तथा बहुसंख्यक समाज इसे समझता हो
2. भाषा को सीखना सरल हो।
3. भाषा का अस्तित्व अल्पस्थायी स्थिति पर निर्भर हो।
4. भाषा में सभी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक व्यवहारों को निभाने की क्षमता हो

इन प्रतिमानों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रस्तुत किया।

पुनः हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 1918 में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

आयोजित 'इन्दौर' अधिवेशन में उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी को दक्षिण में ले जाने पर बल दिया तथा अपने पुत्र देवदास गाँधी को वहाँ भेजा। वर्धा में सत्यदेव परिव्राजक सम प्रचारक भी वहाँ पहुँचे तथा 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति' की स्थापना कर हिन्दी को दक्षिण में पहुँचाया।

अपनी पत्रकारिता के माध्यम से भी गाँधी जी राष्ट्रभाषा के प्रश्न को प्रमुखता से उठाते थे। वे 'हरिजन सेवक' पत्र में लिखते हैं कि "स्वराज्य अगर अंग्रेजी बोलने वालों का तथा उन्हीं के लिए है तो अंग्रेजी राष्ट्रभाषा हो सकती है, पर स्वराज्य यदि किसानों, भूखों, मजदूरों तथा अन्त्यजों का है तो हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी भी चाहिए।"

• गैरहिन्दी भाषी होने के बावजूद गाँधी जी अपने भाषणों में प्रमुखता से हिन्दी का प्रयोग करते थे तथा हिन्दी प्रचारकों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहना न होगा कि राष्ट्र तथा राष्ट्रीय निर्माण में महात्मा गाँधी का स्थान अन्यतम है तथा इतिहास में अमिट है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में आंध्रप्रदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 15

आंध्रप्रदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की शुरूआत का श्रेय नाट्याचार्य लक्ष्मण स्वामी को जाता है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से जन-जन तक हिन्दी को पहुँचाने का प्रयास तो किया ही, हिन्दी प्रचारकों की एक मण्डली भी खड़ी कर दी।

पुनः 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की मद्रास में स्थापना के बाद इसकी गतिविधियाँ आंध्रप्रदेश में भी शुरू हुई तथा नेल्लूर, मछलीपट्टनम, काकीनाडा आदि को प्रमुख केन्द्र बनाया गया।

जोंदयाल शिवन्न शास्त्री, मोडिचर्ल वेंकटेश्वर राव तथा वेंकट सुब्बाराव जैसे युवाओं ने हिन्दी सीखने में रूचि दिखाते हुए 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के माध्यम से हिन्दी सीखी तथा वापस आंध्रप्रदेश लौटकर प्रेरणास्रोत बनकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शास्त्री जी ने तो हिन्दी - तेलगू तथा तेलगू - हिन्दी शब्दकोशों की रचना भी की तथा हिन्दी व्याकरण का तेलगू में रूपान्तरण प्रस्तुत किया।

इन्हीं सब प्रयासों से पहले म्यूनिसिपल हाई स्कूलों में हिन्दी के पठन - पाठन का कार्य आरम्भ हुआ तत्पश्चात जिला-बोर्ड के स्कूलों में भी हिन्दी पढ़ाने हेतु प्रयास आरम्भ किये गये।

स्वाधीनता संग्राम से जुड़े प्रमुख नेताओं यथा श्री के. पट्टाभि सीतारमैया आदि के सहयोग से आंध्रप्रदेश में हिन्दी भाषा का प्रश्न राष्ट्रीयता का प्रश्न बनकर उभरा तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार - प्रसार आंदोलनात्मक रूप से हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में शिवप्रसाद सितारे-हिंद का योगदान अप्रतिम है।' प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिवप्रसाद सितारे-हिंद हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के समर्थकों में एक मुख्य व्यक्तित्व हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में उन्होंने सरकार को लिखे गये आवेदन में खुलकर देवनागरी लिपि का पक्ष लिया तथा फारसी व रोमन लिपि का विरोध किया। उन्होंने फारसी लिपि को धर्म व राष्ट्रीयता को प्रकट करने वाली लिपि बताया।

शुरुआत में शिवप्रसाद सितारे हिन्द हिन्दी के संस्कृत-निष्ठ रूप के समर्थक थे तथा उनकी 'भूगोल हस्तामलक', 'मानव धर्मसार' आदि रचनाओं में सहज ही ऐसा देखा जा सकता है।

परन्तु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिक्षा-विभाग का अधिकारी बनने के बाद वे अंग्रेज सरकार की [illegible] नीति से प्रभावित हुए तथा हिन्दी के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

फारसी-निष्ठ स्वरूप की तरफ अत्यधिक झुकाव बढ़ा। उनकी रचना 'इतिहास तिमिर नाशक' में इस परिवर्तन के संकेत मिलते हैं।

उन्होंने हिन्दी के सहज, आम-जन ग्राह्य स्वरूप पर बल दिया जिसमें अँग्रेजी व फारसी शब्दों से कोई परहेज नहीं दिखता तथा लोकभुता के दर्शन होते हैं। उनकी भाषा शैली में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमचन्द तथा उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे लेखकों रचनाकारों के लिए प्रेरणा बनी तथा साहित्य संवर्द्धन में अहम योगदान निभाने में सफल हुई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) क्या आप राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति को संतोषजनक मानते हैं? इस स्थिति को और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? सुझाव दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~राजभाषा से~~

राजभाषा से तात्पर्य ~~अ~~ भाषा के उस वस्तुनिष्ठ तथा पारिभाषिक शब्दावली युक्त स्वरूप से है जिसका प्रयोग शासकीय कार्यों में किया जाता है।

राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास हेतु यूँ तो संविधान सभा ने अनुच्छेद 343 से 351 तथा अनुच्छेद 120 एवं अनुच्छेद 210 के माध्यम से एक मार्ग प्रशस्त किया परन्तु बाद के नेतृत्व में राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी तथा क्षेत्रवादी प्रवृत्तियों के उभार के कारण राजभाषा हिन्दी का प्रश्न हाशिये पर चला गया तथा गौण होता गया जो कि निम्नांकित उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है

1. आज भी उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों की प्रामाणिक भाषा अंग्रेजी है पुनः अंग्रेजी पाठ को हिन्दी पाठ पर वरीयता दी जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

२. शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अनुवादित शब्द अप्रचलित तथा अबोध हैं। यथा साइकिल का अनुवाद द्विचक्रवाहिनी।

३. संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में भी अंग्रेजी का प्रश्नपत्र अनिवार्य है, हिन्दी का नहीं।

अतः राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता।

इस स्थिति को सुधारने हेतु कुछ सुझाव निम्नांकित हैं।

1. तकनीकी शब्दावली आयोग तथा विद्यार्थी शब्दावली आयोग द्वारा प्रचलित अनुवादित स्वरूप को वरीयता दी जानी चाहिए जो आसानी से समझा जा सके। इसके लिए अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय जोड़कर या वर्तनी परिवर्तित कर ऐसा किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) को हिन्दी प्रशिक्षण प्राप्त अधिकारियों-कर्मचारियों की उन्नति, वेतनवृद्धि आदि में अपना मत देने का अधिकार होना चाहिए जिससे हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा मिले।

3. संसद-समिति का सक्रिय योगदान इस दिशा में वांछनीय है जो सरकार का दायित्व तय करे तथा समय-समय पर रिपोर्ट माँगे।

4. राजभाषा के रूप में हिन्दी को अनिवार्य कर ~~सा~~ उन शब्दों को दूर दे देनी चाहिए जो इस अनिवार्यता से बाहर रखना चाहते हैं।

5. त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वाधीनता आन्दोलन की शुरूआत से ही महाराष्ट्र और बँगाल आंदोलन के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। जहाँ राष्ट्र का प्रश्न उठता है वहाँ राष्ट्रभाषा का प्रश्न सहज ही उठ खड़ा होता है, ऐसी ही महाराष्ट्र में हिन्दी को लेकर हुआ।

प्रार्थना समाज के संस्थापक महादेव गोविंद रानाडे के समय से ही राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का पक्ष लिया जाता रहा क्योंकि यह भाषा बहुसंख्यक समाज द्वारा बोली व समझी जाती रही है।

बाद में बालगंगाधरतिलक ने इसे 'स्वराज्य' तथा स्वदेशी के प्रश्न से जोड़कर देखा तथा हिन्दी केसरी' नामक पत्र तथा 1907 में टाइप वाले फॉन्ट का निर्माण व प्रकाशन कर राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाराष्ट्र के प्रमुख आंदोलनकारी श्री काका कालेलकर, महात्मा गाँधी को अपना आदर्श मानते हुए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का ओहदा दिलाने के लिए लगातार प्रयासरत रहे तथा देश भर में भ्रमण कर हिन्दी के समर्थन में जनमत जुटाते रहे।

वर्धा (महाराष्ट्र) ही दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का केन्द्र बिन्दु बना तथा महाराष्ट्र में स्कूली शिक्षा मुख्यतः म्युनिसिपल हाई स्कूलों में हिन्दी के पठन-पाठन का कार्य शुरू किया गया।

कहना न होगा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र ही गैर-हिन्दीभाषी क्षेत्रों का नेतृत्व करने में सक्षम रहा तथा महाराष्ट्र का समर्थन ही राष्ट्रभाषा हिन्दी को दक्षिण के चारों राज्यों में पहुँचा पाया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में काका कालेलकर और मदनमोहन मालवीय के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का योगदान अप्रतिम है। स्वाधीनता के पहले इस बात पर एकमत था कि स्वतन्त्र भारत में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होगी। इसी परिप्रेक्ष्य में काका कालेलकर तथा मदनमोहन मालवीय का योगदान देखा जा सकता है।

काका कालेलकर

काका कालेलकर महात्मा गाँधी के प्रमुख सहयोगी तथा गाँधी जी की भाषा नीति के प्रखर समर्थक थे।

ये हिन्दी के 'हिन्दुस्तानी' स्वरूप को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए प्रतिबद्ध थे। इस क्रम में इन्होंने सम्पूर्ण महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत का भ्रमण किया तथा हिन्दी के प्रश्न को राष्ट्रीयता के साथ जोड़कर हिन्दी के पक्ष में जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

मद्रास हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विस्तार में इन्होंने अहम् योगदान दिया।

मदनमोहन मालवीय

मदनमोहन मालवीय की हिन्दी सेवा की शुरुआत का क्रम शुरू हुआ जब इन्हे काला कांकर के राजा रामपाल द्वारा 'हिन्दुस्तान' दैनिक का सम्पादक नियुक्त किया गया।

तत्पश्चात मालवीय जी ने हिन्दी 'अभ्युदय' साप्ताहिक पत्र तथा 'मर्यादा' मासिक पत्रिका निकालकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया।

इन्होंने 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' की स्थापना की तथा इसमें हिन्दी के अध्ययन को अनिवार्य कर दिया।

इन्हीं की प्रेरणा से गणेशदत्त सम पत्रकारों ने 'विश्वबंधु' जैसे पत्रों का प्रकाशन कार्य किया।

कहना न होगा कि मालवीय जी का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

योगदान हिन्दी साहित्य के विकास में अमिट है

a

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'परख' की 'कट्टो'

मनोवि श्लेषणावादी उपन्यासकार प्रेमचन्द के नारी पात्र पाठक को सदैव आकृष्ट करते रहे हैं।

प्रेमचन्द के पुरुष पात्रों की तुलना में ये अधिक दृढ़, धैर्यशील तथा प्रभावशाली हैं। चाहे वह 'सुनीता' हो या 'मृणाल'।

'परख' उपन्यास का प्रमुख चरित्र 'कट्टो' भी इसी क्रम का नैरन्तर्य है। अपनी उत्सर्गी क्षमता, वैचारिक स्पष्टता तथा दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण यह पात्र उपन्यास की प्रमुख पात्र बनकर उभरी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

प्रगतिवादी लेखन वह धारा है जो मार्क्सवाद के 'सामाजिक न्याय' व ऐतिहासिक भौतिकवाद से अपनी वैचारिक ऊर्जा ग्रहण करता है। हिन्दी उपन्यास की प्रगतिवादी धारा भी इसी क्रम का हिस्सा है।

प्रगतिवादी उपन्यास मानता है कि सामाजिक संरचना का मूल आधार आर्थिक संरचना है तथा समाज में दो ही वर्ग शोषित तथा शोषक पाये जाते हैं। वितरण मूलक न्याय ही सामाजिक समता का एकमात्र उपाय है।

प्रगतिवादी धारा शोषित वर्ग में चेतना उत्पन्न करने को ही साहित्य का एकमात्र उद्देश्य मानती है।

हिन्दी की प्रगतिवादी उपन्यास धारा में प्रमुख नाम यशपाल, रांगेय राघव तथा नागार्जुन आदि के लिए जाते हैं।

यशपाल के उपन्यास 'दादा कॉमरेड'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

पार्टी कॉमरेड में यांत्रिक रूप से तथा 'दिव्या' में सहज रूप से प्रगतिचक्र की चेतना का दर्शन होता है।

इसी प्रकार प्रेमचन्द के उपन्यासों में भी सहज रूप से प्रगतिवाद के संकेत मिलते हैं पर यांत्रिकता यहाँ हावी नहीं होने पाई है।

प्रगतिवादी धारा कथ्य को शिल्प पर वरीयता देती है तथा शिल्प को सहज संप्रेषण का माध्यम मात्र मानती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्माकर का श्रृंगार-वर्णन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्माकर को रीतिकाल के अंतिम दौर के कवियों में गिना जाता है जिनका समय मुख्यतः 19 वीं शताब्दी का है।

पद्माकार के काव्य में मुख्यतः देह-मूलक, भोगमूलक संयोग श्रृंगार का वर्णन मिलता है जिसका मुख्य उद्देश्य भोग की समस्त सामग्रियों को एकत्र कर दरबारी रसिकों की इन्द्रिय तृप्ति प्रतीत होता है ऐसा ही एक उदाहरण द्रष्टव्य है

" गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनिजन है
चाँदनी है, चिक है, चिरागन की माला है
कहें पद्माकर ज्यों गजक गिजा है सजी
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है"

श्रृंगार के साथ कहीं कहीं त्योहारों, उत्सवों का वर्णन कर लोकबद्धता प्रकट करने का प्रयास भी कहीं-कहीं किया जाता है

यथा -
" या अनुराग की फाग लखौं, जहँ राजत राग किसोर - किसोरी ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

गोरिन के संग भीजिगो सॉवरो, सॉवरे के संग भीजिगी गोरी" ॥

संयोग श्रृंगार की अधिकता के बावजूद इन्होंने कहीं-कहीं ऋतु-वर्णन के माध्यम से विरह को भी अभिव्यक्ति दी है।

" जो पावस बनाओ तो न विरह बनाओ
तो विरह बनाओ तो न पावस बनाओ "

इस प्रकार पद्माकर के श्रृंगार वर्णन में लोक-बद्धता, वियोग, संयोग सभी रूप दर्शित होते हैं।

---x---

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

'प्रेम की पीर' के कवि 'घनानंद' रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख स्तम्भ हैं जिन्होंने दरबारी परिस्थितियों में रहकर भी अपनी 'अनुभूति की प्रामाणिकता' तथा 'सहज शिल्प' का प्रयोग करते हुए चमत्कार-प्रियता से दूरी बनाए रखी।

इसी वैशिष्ट्य में घनानंद की काव्य-भाषा को देखा जा सकता है।

इनकी काव्यभाषा में ब्रज अपने विशुद्ध रूप में उपस्थित होती है। विशेष सजगता न होने के उपरांत भी इनके व्याकरण अनुशासन की आचार्य शुक्ल ने प्रशंसा की है।

अलंकारों का विशेष मोह न होने के बावजूद सहज रूप में श्लेषादि अलंकारों का प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है यथा-

" तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला
मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं "।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार बिंब की अवधारणा से परिचय नहीं होने पर भी इन्होंने लोकजीवन के सहज बिंब बखूबी उकेरे हैं।

इनके काव्य में 'सुजान' के प्रतीकत्व में राधा का प्रयोग। प्रतीकात्मकता का सहज उदाहरण है।

कहना न होगा कि विशेष प्रयास न करने पर भी घनानंद की काव्यभाषा सजग कवियों को भी लज्जित करती है। उन्होंने कहा भी है

" लोग हैं लागे कवित्त बनावत
मोहे तो मोरे कवित्त बनावत "

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) उन्नीसवीं सदी में हिन्दी गद्य के विकास में प्रताप नारायण मिश्र के अवदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु मण्डल के रचनाकार प्रताप-नारायण मिश्र के का रचनाकर्म निबंध, नाटक, लेखन आदि गद्यविधाओं से लेकर पद्य तक विस्तृत रहा है। पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका योगदान अहम माना गया है।

उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली गद्य हेतु स्वीकृत भाषा का रूप ले रही थी और हिन्दी गद्य अपनी शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर हो रहा था। इसी समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से प्रेरित होकर प्रताप नारायण मिश्र तथा बालकृष्ण भट्ट आदि भी अपना रचना कर्म कर रहे थे।

प्रताप नारायण मिश्र में 'ब्राह्मण' पत्र के माध्यम से फारसी मिश्रित, राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की भाषा को अपनाया तथा गद्य को सहज जनग्राह्य बनाने पर बल दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

निबंधों के क्षेत्र में यूँ तो इन्होंने भावात्मक, विचारात्मक सभी प्रकार के निबंध लिखे परन्तु अपने भावात्मक निबंध लेखन की उत्कृष्टता के कारण इनकी तुलना 'रिचर्ड स्टील' से की जाती है तथा इन्हें 'हिन्दी का स्टील' कहा जाता है। इनके निबंधों का संग्रह 'निबंध नवीनतम' में मिलता है। इन्होंने अपने मासिक पत्र में सुआशा, रिश्वत, बेगार आदि प्रत्येक विषय पर निबंध लिखे।

नाटक के क्षेत्र में भी मिश्र जी का योगदान प्रहसनों तथा हास्य-व्यंग्य को नाटक में स्थान देने को लेकर प्रमुख है। इन्होंने हठी-हमीर, कलि-कौतुक जैसे नाटक प्रांजल गद्य भाषा में लिखे

इन्होंने गद्यभाषा के रूप में प्रचलित जनभाषा का समर्थन किया तथा अँग्रेजी, फारसी आदि सभी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भारतेन्दु के समान ही मिश्र जी की भाषा कृत्रिमता से दूर है। ग्रामीण शब्दों का प्रयोग उसमें स्वच्छन्दता से हुआ है तथा पंडिताऊपन और पूर्वपन की अधिकता है।

हालांकि मध्यानुरूप इन्होंने अपनी भाषा को ढाला है।

इस प्रकार हिन्दी गद्य को शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था तक पहुँचाने में मिश्र जी का योगदान अहम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अष्टछाप के कवि नंददास के कवि-कर्म पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अष्टछाप के कवियों में सूरदास के बाद यदि कोई कवि सर्वाधिक सफल रहा है तो वे नंददास हैं।

इनके कवि-कर्म में ब्रज भाषा अपने प्रांजल तथा व्याकरण-सम्मत स्वरूप में उभरकर आई है तथा इनका श्रृंगार-वर्णन सूर की ही भाँति उत्कृष्ट हो उठा है।

अपने 'भंवरगीत' में ये सूर की परंपरा से अलग जाते हुए गोपियों का तर्कशील विचारशील स्वरूप प्रस्तुत करते हैं जो उद्धव से कठिन तार्किक प्रश्न करती हैं - यथा -

" जो इनके गुन नाहिं, और गुन भए कहाँ ते,
बीज बिना तरु जमैं, मोह तुम कहाँ कहाँ ते ॥ "

इसी प्रकार इनका प्रकृति वर्णन भी सूर से अधिक व्यापक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नंददास ने अपने कवि-कर्म में सगुण भक्ति का समर्थन करते हुए भी निर्गुण को लताड़ा नहीं है जैसा कि सूर के यहाँ देखने को मिलता है।

शायद इसीलिए कवि को कहना पड़ा है—

"और कवि गढ़िया
नंददास जड़िया।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी उपन्यास को नया शैल्पिक ढाँचा प्रदान करने में जैनेन्द्र कुमार के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

जैनेन्द्र कुमार हिन्दी उपन्यास की 'मनोविश्लेषणात्मक' धारा के लेखक हैं जो फ्रॉयड के 'मनोविश्लेषणवाद' से अपनी वैचारिक ऊर्जा ग्रहण करते हैं तथा मानते हैं कि व्यक्ति का अध्ययन 'चेतन' के स्तर पर करना भ्रामक ही नहीं अपर्याप्त भी है। इन्होंने फ्रॉयड को गाँधी से मिलाते हुए अपने विचार व कथ्य प्रस्तुत किया है।

अपने कथ्यानुरूप जैनेन्द्र ने उपन्यास के प्रचलित शैल्पिक ढाँचे का अस्वीकार किया तथा नवीन शिल्प की अवधारणा प्रस्तुत की जिसे निम्नांकित बिंदुओं में देखा जा सकता है

1. कथानक: कथानक का आदि, मध्य और अंत का क्रम यहाँ टूट गया है, इनके यहाँ कथानक रैखिक न होकर वक्र हो गया है।

2. पात्र: इनके यहाँ वर्ग-चरित्रों के स्थान पर 'व्यक्तिगत पात्रों' की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संरचना की गई है। प्रत्येक पात्र अपने आप में विशिष्ट व्यक्ति है जो स्वयं के अंतर्द्वंद्व से जूझ रहा है तथा स्थितियों द्वारा संचालित हो रहा है। वह 'अच्छा' या 'बुरा' न होकर 'मानव' है।

3. भाषा: आंतरिक विश्लेषणों के कारण जैनेन्द्र की भाषा अंतर्मुखी हो गई है। यह विचार-प्रधान, विश्लेषणात्मक भाषा है जहाँ विश्लेषण एवं तर्क को वरीयता दी गई है। कथ्यानुरूप शब्दों का प्रयोग किया गया है तथा किसी भाषा के शब्दों से परहेज नहीं किया गया।

4. इनके यहाँ घटनाओं की भीड़ के स्थान पर स्थितियों का विश्लेषण दिखता है।

पात्रों के स्तर पर नारी पात्रों की सबलता भी इनके उपन्यासों का प्रमुख अंग है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

यह वही शैल्पिक ढाँचा है जिसे बाद में 'नया उपन्यास' आदि धाराओं में प्रमुखता से स्वीकृति मिली और जो भोगे हुए यथार्थ के संप्रेषण का माध्यम बना।

कहना न होगा कि जैनेन्द्र का शिल्प शिल्प के प्रतिष्ठित प्रतिमानों से प्रस्थान एवं नए आयामों का स्वीकार्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation